“जीवन” और “अनन्त जीवन” में बहुत बड़ा अंतर है।

हर मनुष्य के पास जीवन है। और केवल मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी और यहाँ तक कि पौधों के पास भी जीवन है। लेकिन जबकि अनेक प्राणियों में जीवन है, सबके पास अनन्त जीवन नहीं है।

अनन्त जीवन बिल्कुल भिन्न है—यह वह वरदान है जिसे खोजना और पाना पड़ता है। जिसके पास यह नहीं है, उसके पास केवल अस्थायी जीवन है, जो शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जिनके पास अनन्त जीवन नहीं है, वे मृत्यु के बाद जीवन के लिए नहीं उठाए जाएँगे, बल्कि आग की झील में नाश हो जाएँगे।

अनन्त जीवन—जिसे परिपूर्ण जीवन या जीवन की परिपूर्णता भी कहा जाता है—सिर्फ़ एक ही व्यक्ति में पाया जाता है: यीशु मसीह में।

यूहन्ना 10:10
“चोर केवल चोरी करने, घात करने, और नाश करने आता है; मैं
इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत का जीवन पाएं।”

समझे? प्रभु यीशु केवल इसलिये नहीं आये कि हमें जीवन

मिले—यानी स्वास्थ्य और सांसारिक आशीष—बल्कि इसलिये भी कि हमें परिपूर्ण जीवन मिले, अर्थात् उनमें अनन्त जीवन।

अनन्त जीवन कैसे पाया जाए?

बहुत लोग यह सोचकर भ्रमित हो जाते हैं कि अच्छे आचरण, किसी धर्म से जुड़ना, या दस आज्ञाओं का पालन करना ही अनन्त जीवन पाने के लिये पर्याप्त है। लेकिन पवित्र शास्त्र स्पष्ट करता है कि यदि कोई व्यक्ति स्वयं का इंकार कर यीशु मसीह का अनुसरण नहीं करता, तो ये सब बातें उसे अनन्त जीवन नहीं देतीं। धर्म, अच्छा आचरण या अच्छी प्रतिष्ठा मनुष्य को सांसारिक आशीष तो दे सकती है, परन्तु अनन्त जीवन कभी नहीं।

धनवान युवक की घटना पर विचार कीजिए:

मत्ती 19:16–21
“और देखो, एक जन उसके पास आया और कहा, हे गुरु, मैं कौन-सा भला काम करूँ, कि अनन्त जीवन पाऊँ?
उसने उस से कहा, तू मुझ से भलाई के विषय में क्यों पूछता है? एक ही है जो भला है; और यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता
है, तो आज्ञाओं को मान।
उसने उससे कहा, कौन-सी? यीशु ने कहा, ‘हत्या न करना, व्यभिचार

न करना, चोरी न करना, झूठी साक्षी न देना,
अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।’
उस जवान ने उस से कहा, ये सब मैं ने मान रखी हैं; मुझे और क्या घटी है?
यीशु ने उससे कहा, यदि तू सिद्ध होना चाहता है, तो जा, अपनी संपत्ति बेचकर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा; और आकर मेरा पीछा कर।”

ध्यान दीजिए: जब उस युवक ने अनन्त जीवन के बारे में पूछा, तो यीशु ने पहले केवल जीवन की बात की, जो आज्ञाओं का पालन करने से मिलता है—अर्थात् इस धरती पर लम्बा और आशीषित जीवन, जैसा कि परमेश्वर ने वादा किया:

लैव्यव्यवस्था 18:5
“इसलिये तुम मेरी विधियों और नियमों को मानना; जिन्हें
मनुष्य मानकर उनके द्वारा जीवित रहेगा: मैं यहोवा हूँ।”

लेकिन जब युवक ने और गहराई से पूछा, तब यीशु ने उसे सच्चाई बताई: यदि वह वास्तव में अनन्त जीवन चाहता है, तो उसे सब कुछ त्यागकर स्वयं का इंकार करना होगा, क्रूस उठाना होगा और उसका अनुसरण

करना होगा।

दुर्भाग्य से उस युवक ने केवल सांसारिक जीवन चुना और यीशु को छोड़ दिया—वह आशीष और सांसारिक जीवन तो पा गया, परन्तु अनन्त जीवन नहीं।

अनन्त जीवन की कीमत

यीशु मसीह कल, आज और युगानुयुग एक समान है (इब्रानियों 13:8)। वही माँग जो उन्होंने उस युवक से की थी, आज हमसे भी करते हैं:

लूका 14:33
“तो इसी प्रकार तुम में से जो कोई अपने सब कुछ से अलग नहीं
होता, वह मेरा चेला नहीं हो सकता।”

यह त्याग पहले मन से शुरू होता है। जो कुछ भी परमेश्वर के स्थान को ले लेता है—धन, सम्बन्ध, प्रतिष्ठा, या सुख—उसे हृदय से छोड़ना होगा। यदि मसीह वास्तव में आपके हृदय में राजा हैं, तो चाहे आपके पास अधिक हो या कम, आप उससे बँधे नहीं रहते।

अनन्त जीवन महंगा है। यह सच्चे आत्म-त्याग और प्रतिदिन क्रूस उठाने (लूका 9:23) की माँग करता है। लेकिन इसका प्रतिफल असीमित है:

मत्ती 19:28–29
“यीशु ने उनसे कहा, मैं तुम से सच कहता हूँ, कि नये जगत में जब मनुष्य का पुत्र अपने तेज के सिंहासन पर बैठेगा, तब तुम जो मेरे पीछे हो लिये हो, भी बारह सिंहासनों पर बैठोगे, और इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे।
और जिसने मेरे नाम के लिये घर या भाई या बहिन या पिता या माता या स्त्री या पुत्र या खेत छोड़ा है, वह सौ गुना पाएगा, और अनन्त जीवन का अधिकारी होगा।”

अन्तिम निवेदन

मित्र, आज आप किस पर भरोसा कर रहे हैं? अपने धर्म पर? अपने सम्प्रदाय पर? अपने अच्छे कामों पर? याद रखो, उस युवक ने आज्ञाओं का पालन किया, फिर भी उसके पास अनन्त जीवन नहीं था।

अच्छे आचरण से शायद आपको इस संसार में जीवन मिल जाये। लेकिन अनन्त जीवन केवल यीशु देता है। यदि आप अनन्त जीवन चाहते हैं, तो

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

अपने सम्प्रदाय, अपने घमण्ड, अपने धन और अपनी उपलब्धियों को त्यागकर यीशु के पास आओ—एक छोटे बालक के समान, दीन और समर्पित होकर।

यूहन्ना 17:3
“अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझे जो अकेला सच्चा परमेश्वर है,
और यीशु मसीह को जिसे तू ने भेजा है, पहचानें।”

आज का दिन बिना यीशु को समर्पित किए न जाने दें। आपको नहीं पता कि कल क्या होगा। यदि आपने अभी तक यीशु को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु नहीं बनाया है, तो मन फिराओ, अपने पापों की क्षमा माँगो और उन्हें अपने जीवन में बुलाओ। सच्चे मन से प्रार्थना करो—या किसी विश्वासयोग्य मसीही को ढूँढ़ो जो आपके साथ प्रार्थना करे।

केवल यीशु मसीह अनन्त जीवन देता है।

1 यूहन्ना 5:11–12
“और गवाही यह है, कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है; और यह जीवन उसके पुत्र में है। जिस के पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिस के पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास

जीवन नहीं है।”

प्रभु आपको आशीष दे, जब आप केवल जीवन ही नहीं, परन्तु यीशु मसीह में अनन्त जीवन की खोज करें।

क्या आप चाहेंगे कि मैं इस हिन्दी संस्करण को भी प्रवचन रूपरेखा (भूमिका – मुख्य बिंदु – अनुप्रयोग – अन्तिम निवेदन) के रूप में व्यवस्थित कर दूँ ताकि इसे सीधे प्रचार/शिक्षण के लिये उपयोग किया जा सके?

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp